हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा “प्रकृति : छात्र-वैज्ञानिक मिलन कार्यक्रम” के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, जाखू-हिल्स, शिमला में व्याख्यान का आयोजन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के मध्य एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया, जिसके तहत परिषद् के अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों के माध्यम से स्कूली विद्यार्थियों को वानिकी एवं पर्यावरण के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से **“प्रकृति : छात्र-वैज्ञानिक मिलन कार्यक्रम”** प्रारंभ किया गया है। दोनों पक्षों ने देश के भविष्य युवा पीढ़ी को पर्यावरण, वनों, वानिकी अनुसंधान और संबंधित विषयों के बारे में अवगत एवं जागरूक कराने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम के संचालन पर अपनी सहमती प्रकट की।

“प्रकृति : छात्र-वैज्ञानिक मिलन कार्यक्रम” की शुरुआत में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केंद्रीय विद्यालय, जाखू हिल्स, शिमला के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों (लगभग 50) के लिए वानिकी तथा पर्यावरण के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से दिनांक 20 नवम्बर, 2018 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री विनोद कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों व संकाय का अभिनंदन तथा स्वागत करते हुए बताया कि *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्*, देहरादून, जो कि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अधीन एक स्वायत संस्था है तथा वानिकी अनुसंधान एवं पर्यावरण के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को पॉवरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह संस्थान पश्चिमी हिमालय राज्यों - हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर में वानिकी एवं वानिकी अनुसन्धान तथा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है व संस्थान की गतिविधियों के बारे में भी विद्यार्थियों को विस्तार से अवगत कराया।

डॉ. अश्वनी तपवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने पॉवरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों को **‘वन पारिस्थितिकी तंत्र में कवक की भूमिका’** पर प्रस्तुति दी। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने मशरूम की पहचान, प्रयोग, लाभ-हानियों, कृषिकरण तथा पर्यावरण पर इसके पड़ने वाले प्रभाव के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि वर्तमान में पर्यावरण असंतुलन के फलस्वरूप एक तरफ जहां मानव जीवन को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण में भी बहुत से बदलाव पाए जा रहे हैं। इस स्थिति से निजात पाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण करें ताकि पर्यावरण का संरक्षण सुनिश्चित हो सके। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे सफाई अभियान के बारे में भी जानकारी

प्रदान की तथा विद्यार्थियों से आहवान किया कि वे इस अभियान के संचालन तथा आम जनता को इसके प्रति जागरूक करने में अहम योगदान दे सकते हैं।

विद्यार्थियों ने वानिकी एवं पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ चर्चा में गहन रूचि तथा उत्साह दिखाया। वार्तालाप के दौरान एक विद्यार्थी द्वारा अनुसंधान बारे पूछे गए प्रश्न के उत्तर में डॉ. तपवाल ने बताया कि अनुसन्धान किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज' करने की प्रक्रिया है, जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का सूत्रपात किया जाता है।

"प्रकृति"
"PRAKRITI"
छात्र – वैज्ञानिक मिलन कार्यक्रम
Student- Scientist Connect Programme
A joint effort

कार्यक्रम के अंत में केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य, श्री मोहित गुप्ता के साथ **प्रकृति कार्यक्रम** के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। संस्थान के प्रतिनिधियों ने प्रधानाचार्य को बताया कि वित्त-वर्ष 2019-20 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित की जाने वाली विस्तार गतिविधियों हेतु एक विस्तृत कैलेंडर तैयार किया जाएगा तथा विद्यार्थियों व शिक्षकों के शैक्षणिक भ्रमण पर भी विचार किया जाएगा।

****